Tel. : 9342254131

ओ३म्

Email : aryasamajmarathalli@yahoo.co.in
www.bangalorearyasamaj.com

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य ज्योति
ARYA JYOTI
ಆರ್ಯ ಜ್ಯೋತಿ

November-2024

Arya Samaj Marathalli Monthly Newsletter

Sunday Weekly Satsang : 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस (दीपावली) पर विशेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन दर्शन को विश्व पटल पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता

– एस.पी. कुमार (फकीरे दयानन्द)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व एवं कृतित्व से 19वीं सदी के पराधीन और जर्जरित भारत को गहराई तक झकझोरा था। उसका प्रभाव हम 21वीं सदी में भी महसूस कर रहे हैं और उनसे प्रेरणा पाकर उन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों से लोहा ले रहे हैं जो दीमक बनकर समाज व धर्म को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक जगत् की व्याधियों, दुर्बलताओं तथा त्रुटियों का तलस्पर्शी अध्ययन ऋषिवर ने किया था, अतः रोग के अनुसार ही उन्होंने उपचार किया। तब तक ऐसा सर्वांगीण प्रयास किसी भी समकालीन सुधारक से न हो सका था, यद्यपि सुधार के नाम पर विविध क्षेत्रों में बहुत कुछ हो भी रहा था। समग्र क्रान्ति के पुरोधा के रूप में ऋषिवर ने मनुष्य व समाज के सर्वांगीण विकास तथा कायाकल्प के लिए जो आदर्श जीवन मार्ग दिखाया वह वस्तुतः विश्व इतिहास की अनमोल निधि के रूप में शताब्दियों तक देखा जायेगा। महर्षि दयानन्द अपने युग के देदीप्यमान शिखर पुरुष थे। उनका चिन्तन मूलतः वेद पर आधारित था जो अपने उद्भव काल से ही स्वप्रमाणित, चिरन्तन और शाश्वत समझे जाते रहे हैं। अतः दयानन्द जितने प्रासंगिक 19वीं शताब्दी में थे उतने ही प्रासंगिक हर युग खण्ड में रहेंगे।

महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व का जो मूल्यांकन समकालीन एवं परवर्ती समालोचकों ने किया वह अधूरा तो है ही, यथार्थ से भी कोसों दूर है। उन्हें मात्र हिन्दू समाज सुधारक, कट्टर राष्ट्रवादी, पंथों का कटु आलोचक अथवा आर्य समाज जैसी जुझारू व लड़ाकू संस्था का संस्थापक मान लेना उनके प्रति अन्याय है। इन चौखटों में ऋषिवर को कैद करके हमने उनके दिव्य एवं भव्य जीवन दर्शन का अवमूल्यन करने का अपराध किया है। यह ठीक है कि समकालीन समस्याओं से भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन यह उनके संघर्ष की इति नहीं आरम्भ था। दयानन्द का मूल्यांकन पूर्वाग्रहों से नहीं बल्कि उस दृष्टिकोण से होगा जो आगे चलकर रोम्यांरोला, योगी अरविन्द घोष, साधु टी. एल. वास्वानी आदि ने अपनाया। वस्तुतः महर्षि दयानन्द मानवतावादी, वैश्व संस्कृति के उद्गाता, विश्व–शांति के महानायक, साम्प्रदायिक सद्भावना के उन्नायक, समाजवादी मूल्यों के प्रवक्ता तथा अन्याय, अज्ञान, अभाव और शोषण के विरूद्ध संघर्षरत रहने वाले कालजयी योद्धा थे।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन दर्शन को विश्व पटल पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता

महर्षि दयानन्द का संघर्ष मूलतः पौराणिक हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाईयों, बौद्धों, जैनियों व सिखों से था क्योंकि उनके धर्मग्रन्थों को लेकर उन्होंने कठोर टिप्पणियाँ अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में की है। लेकिन ऐसा निष्कर्ष निकालने से पूर्व हम उनके ऋषित्व को भूल जाते हैं और प्रायः यह भी भूल जाते हैं कि खण्डन में यदि उन्होंने दस पृष्ठ लिखे हैं तो मण्डन में सौ पृष्ठ भी रचे हैं। ऋषिवर का खण्डन तर्कयुक्त, धर्मयुक्त, विज्ञान–युक्त और वैदिक गरिमा से ओत–प्रोत है।

'सत्यार्थप्रकाश' से तो सभी परिचित हैं। इस ग्रन्थ ने अंधविश्वास, कुरीतियों, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, श्राद्ध, तीर्थाटन पर तो जमकर प्रहार किया ही पर इसके साथ–साथ स्वाधीनता की रणभेरी भी बजाई, अपने इतिहास पर गर्व के भाव उत्पन्न किये, अपनी परम्परा के प्रति आस्था और संस्कृति के प्रति विश्वास जगाया, स्वदेशी का मन्त्र जनमानस में फूंका, सेमेटिक सम्प्रदायों द्वारा चलाये जा रहे धर्मांतरण के अभियान पर रोक लगाई, नर–नारी की समानता की अलख जगाई और अस्पृश्यता के विरूद्ध शंखनाद किया।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखकर उन्होंने वेदभाष्य की कुंजी विद्वत् समाज को दी, पाश्चात्य वेदज्ञों द्वारा वेदों पर हो रहे अनर्गल प्रहारों को रोका, वेदों के उदात्त, विशाल एवं गम्भीर स्वरूप को प्रकट किया। 'गोकरूणानिधि' लिखकर उन्होंने जीव हत्या के विरूद्ध संघर्ष शुरू किया, शाकाहार का पक्ष मजबूत किया और गोरक्षा आन्दोलन का आह्वान गोरक्षिणी सभाएँ गठित करके किया। अंग्रेज शासकों को उनके आंदोलन में 1857 के विप्लव की गंध आई और इसे खतरनाक आंदोलन मानते हुए अपने खुफिया तन्त्र को सक्रिय कर दिया। लेकिन ऋषिवर एक बागी फकीर बनकर, अपने ढंग से, स्वराज का मंत्र जन–जन तक पहुँचाते रहे। नीचे ही नीचे उन्होंने क्रांति की प्रचण्ड पृष्ठभूमि तैयार कर डाली। बहुत कम लोगों को पता है कि अपने इस अभियान के कारण ही ऋषि दयानन्द को अपना बलिदान देना पड़ा। राजनीतिक हत्याओं के रहस्य शताब्दियों बाद जाकर खुलते हैं। यही त्रासदी ऋषि हत्याकाण्ड के साथ हुई।

आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, व्यभिचार, नशाखोरी, आतंकवाद, प्रदूषण, हिंसा, अपराधवृत्ति, विकसित राष्ट्रों की दादागीरी, शोषण, अन्याय, अज्ञान और अभाव का बोलबाला है। हर समाज व राष्ट्र इन सभी दोषों से आहत एवं व्याकुल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन समस्त रोगों का उपचार पंच महायज्ञ का विधान प्रस्तुत करके किया। ये पाँच यज्ञ वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं जिनमें ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ अन्तर्निहित हैं। सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर यदि इन पाँच यज्ञों को अपना लिया जाये तो तीसरे विश्व युद्ध का जो खतरा आज मंडरा रहा है वह दूर हो सकता है और समाज जिन आपदाओं से त्रस्त है उनसे मुक्त हो सकता है।

महर्षि दयानन्द ने वेद, योग, पंचमहायज्ञ, यज्ञोपवीत, आयुर्वेद, इतिहास, संस्कृति संस्कार आदि के प्रति आस्था भाव जगा कर उन ऋषिकृत परम्पराओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया था जिन परम्पराओं ने अतीत में भारत को विश्व गुरु के पद पर स्थापित एवं प्रतिष्ठित कराया था। उनका आन्दोलन भारतीय पुनर्जागरण का आंदोलन न होकर वस्तुतः वैश्व चिन्तन को संस्कारित एवं प्रेरित करने का आन्दोलन था।

यह युग तुलनात्मक अध्ययन का युग है। तर्क और विज्ञान की कसौटियों में लोगों का विश्वास पहले से अधिक बढ़ा है, अतः दयानन्द के जीवन दर्शन के फलने–फूलने की व्यापक सम्भावनाएँ आज मौजूद हैं। इन अवसरों व संभावनाओं का समुचित लाभ उठाकर महर्षि दयानन्द की प्रासंगिकता विश्व स्तर पर भी सिद्ध एवं मुखर की जा सकती है।

आर्य समाज के नियम

– पुष्पा शर्मा

सत्य विद्या से जाना जाए
आदिमूल वह दाता है।
अनन्त दयालु अजर व नित्य
सर्वेश्वर कहलाता है।
करें उपासना उसकी हरदम
उससे न कोई ऊपर है।
रखें मन में सदा उसी को
जीना फिर कहां दूभर है।
सत्य विद्या की एक ही पुस्तक
चार वेद कहलाते हैं।
परम धर्म यह सब आर्यों का
पढ़ते और सुनाते हैं।
हम को उद्यत रहना होगा
असत्य को बिसराने में।
फिर होगा उद्धार सत्य से
तुझसे लगन लगाने में।
एक उद्देश्य आर्य समाज का
दुनिया का उपकार करें।
चहुं दिशा में होगी प्रगति
फिर न कोई पाप करें।
करें हमेशा धर्म का पालन
प्रीति पूर्वक व्यवहार करें।
सदा होगी विद्या की वृद्धि
अविद्या पर प्रहार करें।
नहीं बने हम इतने स्वार्थी
बस अपनी उन्नति चाहें।
जिम्मेदारी की खातिर हम
फैलाएं अपनी बाहें।
तेरे सम्मुख हाथ जोड़ते
नियम पालें परतंत्र रहें।
हर हितकारी नियम निबाहें
फिर स्वयं को स्वतंत्र कहें।

– मोदी नगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
मो.:–9045443141

हमारे सत्संग

विद्या ही हमें सर्वोच्च शिखर पर ले जाती है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 6 अक्टूबर, 2024 को अपने विचार रखते हुए डॉ. श्वेतकेतु शर्मा (बरेली, उत्तर प्रदेश) ने कहा कि संसार का प्रत्येक मनुष्य प्रतिक्षण यही कल्पना करता है कि हमें सुख मिले, दुःख न मिले। भारत भूमि पर अधिकांश व्यक्ति धार्मिक हैं। कुछ मत, सम्प्रदाय के लोग नास्तिक हो गये। हम सभी आर्य समाज के माध्यम से परमपिता परमात्मा की स्तुति और उपासना के साथ–साथ व्यवहारिक जीवन में सुधार करके सुख की प्राप्ति की इच्छा रखने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक मनुष्य को अपने–अपने कर्मों का फल भोगना होता है। हमें सुख कैसे प्राप्त हो इसके लिए संस्कृत में एक श्लोक है – 'विद्या ददाति विनयम विनयाद याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनम् आप्नोति धनाद धर्म ततः सुखम्।।' इसका अर्थ है ज्ञान व्यक्ति को विनम्र बनाता है, विनम्रता से पात्रता मिलती है, पात्रता से धन और समृद्धि मिलती है समृद्धि से सही आचरण मिलता है, सही आचरण से संतोष मिलता है। प्रत्येक मनुष्य को अच्छी शिक्षा और संस्कार अवश्य सीखनी चाहिए तथा वैदिक मार्ग पर चलते हुए समाज एवं राष्ट्र के लिए कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति ही सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है। विद्या ही हमें सर्वोच्च शिखर पर ले जाती है।

सत्य–असत्य में भेद समझने के लिए हमें वेद का अध्ययन करना चाहिए। बिना ज्ञान के हम आगे नहीं बढ़ सकते। ज्ञान से ही हमें सत्य और असत्य का ज्ञान प्राप्त होता है। जब हमें सत्य–असत्य का भेद समझ आ जायेगा तो हमें सुख की अनुभूति होगी। हम जो ज्ञान सीखते हैं उसे अपने जीवन में अवतरित करना चाहिए। विद्वान् व्यक्ति ज्ञान से ओत–प्रोत होने के साथ–साथ विनयशील भी हो जाते हैं। वर्तमान में प्रो. महावीर अग्रवाल जी पूरे आर्य समाज में उच्च कोटि के विद्वान् हैं और वे विनयशील भी हैं। डॉ. महावीर जी की विनयशीलता और सादगी की प्रशंसा करते कहा कि हम उनकी विनशीलता और सादगी को नमन करते हैं।

कठिन परिश्रम करके जब व्यक्ति विद्या ग्रहण करने के बाद पात्रता को प्राप्त कर लेता है, अपने पद को प्राप्त कर लेता है तो उनके अन्दर विनयशीलता आ जाती है। जब लोग बड़े–बड़े पद प्राप्त कर लेते हैं और अधिक से अधिक धन कमाते हैं तो उन्हें उस धन का सदुपयोग करना चाहिए। उस धन को सही तरीके से इस्तेमाल करना चाहिए। परोपकार के कार्यों में सहयोग करना चाहिए। आज बहुत से सरकारी अधिकारी ऐसे भी हैं जो धन तो बहुत कमा रहे हैं परन्तु उनके अन्दर सुख–शांति नहीं हैं। उनका धन ऐसे–ऐसे कार्यों में खर्च हो रहा है जिसका हम यहाँ वर्णन नहीं कर सकते। अपने आंखों देखी घटनाओं का वर्णन करते हुए कहा कि हमने देखा है कि कई लोग बहुत सारा धन कमाते हैं परन्तु उनके क्रिया–कलाप को देखकर मन को बहुत दुःख होता है।

उन्होंने कहा कि मैं जब बंगलौर के इस आर्य समाज में आता हूँ तो मुझे बहुत संतोष एवं प्रसन्नता होती है। श्री एस.पी. कुमार जी ने इस आर्य समाज की स्थापना करके एक बहुत बड़ा कार्य किया है। वे इस आर्य समाज को खड़ा करने में सात्विक लोगों से प्राप्त धन का इस्तेमाल करके बनाया है उसी का परिणाम है कि आज हम सभी इस समाज में बैठकर वेद ज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को देखकर मन को प्रसन्नता होती है और सुख प्राप्त होता है।

उन्होंने कहा कि हमें जो न पसन्द हो वह कार्य हमें दूसरों के प्रति कभी भी नहीं करना चाहिए। हमारा देश धर्मनिरपेक्ष है। धर्म के नाम पर अनेक मत–सम्प्रदाय में बंटकर रह गया है। कभी सोने की चिड़िया कहा जाने वाला हमारा देश आज कहाँ जा रहा है यह किसी से छिपा नहीं है। अनेक धर्म स्थलों में शराब, मांस आदि का सेवन किया जा रहा है जिसे देखकर आत्मा को ग्लानि होती है। कुछ लोगों ने धर्म की परिभाषा को ही पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। अन्त में उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें विद्या प्राप्त करके धन कमाना चाहिए और उस धन का सदुपयोग करना चाहिए। इस कार्य में आर्य समाज महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है और आगे भी निभाता रहेगा।

जन्म नहीं कर्म के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था स्वीकार्य

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 13 अक्टूबर, 2024 को अपने विचार रखते हुए फकीरे दयानन्द (श्री एस.पी. कुमार) जी ने कहा कि ईश्वर कण–कण में व्याप्त है। उसे अनेकों नामों से जाना जाता है। वह हम सभी का पालन–पोषण करता है, सभी की भूख को शान्त करता है। वह परमात्मा सभी शक्तियों में विद्यमान है उसे देव और देवी भी कहा जाता है। महाभारत काल के पश्चात् अनेक मत–मतान्तर पैदा हो गये। जो शिव को मानते थे उन्हें शाक्य मत को मानने लगे। इसी तरह से अन्य मत–मतान्तर के लोगों को अनेक नामों से पुकारा जाने लगा। जो लोग विष्णु पुराण से प्रभावित होकर ईश्वर में आस्था रखने लगे उन्हें वैष्णव सम्प्रदाय का माना जाने लगा। ईश्वर के जितने भी गुण हैं उन्हें शक्ति के रूप में जाना जाता है। ईश्वर का जानना और मानना और उसे व्यवहार में लाना ही उसकी पूजा है।

महाभारत में वर्ण व्यवस्था कर्मों के आधार पर है। परन्तु आज समाज में जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बना दी गई। ब्राह्मण

वह है जो ब्रह्मत्व का कार्य करता है, सभी के परोपकार और कल्याण की भावना से कार्य करता हो वही ब्राह्मण कहलाने लायक है। जब तक कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था थी तब तक हमारा देश सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता रहा। परन्तु मध्यकाल के बाद जब से जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था चल पड़ी तभी से हमारा देश पतन के गर्त में चला गया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी बराबर हैं, कोई छोटा–बड़ा नहीं है। सभी अपने–अपने कर्म को करने में अपना योगदान देते हैं।

उन्होंने चार देवियों के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा करते हुए उनके वाहनों और उनकी भुजाओं में रखे गये अस्त्र–शत्रों और अभय मुद्रा के संदेश के सम्बन्ध में वैदिक सिद्धान्त के आधार पर व्याख्या की। चित्रकार ने सरस्वती के चित्र के माध्यम से ब्राह्मण के गुणों को दर्शाने का प्रयास किया है। पहले हाथ में वेद दिखाया गया है जिसका अर्थ है ब्रह्माण वेदों का ज्ञाता होना चाहिए और वेदों के अध्ययन में पूरा जीवन अध्ययनरत रहना चाहिए। दूसरे हाथ में वीणा है इसका अर्थ है वह मधुर वाणी वाला होना चाहिए, तीसरे हाथ में माला दिखाया गया है इसका तात्पर्य है कि ब्राह्मण तपस्वी होना चाहिए। चौथा हाथ अभय मुद्रा में दिखाया गया है, इसका तात्पर्य है कि ब्राह्मण ईर्ष्यालु नहीं होना चाहिए सभी को समान रूप से देखने वाला होना चाहिए। उनका वाहन हंस जो सफेद है इसका तात्पर्य है कि ब्राह्मण का चरित्र उज्जवल होना चाहिए, तेजवान होना चाहिए।

अष्टभुजा देवी दुर्गा क्षत्रियों के कर्त्तव्य को दर्शाने के लिए बनाया गया है। इसमें दुर्गा के 7 हाथों में अलग–अलग अस्त्र–शस्त्र दिखाये गये हैं और 8वें हाथ में अभय मुद्रा दिखाया गया है। हमारा राजा कैसा होना चाहिए उसे दर्शाया गया है। दुर्गा के दो रूप दिखाये गये हैं एक है दुर्गा और दूसरा रूप काली के रूप में दर्शाया गया है। इसका तात्पर्य है कि एक ही रूप में क्षत्रिय के दो गुण दिखाये गये हैं। आन्तरिक सुरक्षा के लिए वह अभय देता है और बाहरी सुरक्षा के लिए वह दुश्मन का नाशक होता है। काली माता के गले में मुण्डकों की माला और मुंह से बाहर जीभ दर्शाया गया है इसका तात्पर्य है कि जब क्षत्रिय युद्ध में जायेंगे तो उन्हें खून की पिपासा की भावना रखनी होगी तभी वे युद्ध जीत पायेंगे। देवी के वाहन शेर का तात्पर्य है कि क्षत्रिय युद्ध में शेर की गर्जना करते हुए युद्ध को जीते।

लक्ष्मी देवी के चित्रण का तात्पर्य है लोगों को धन–सम्पदा उपलब्ध कराना। यह वैश्य के चित्र को दर्शाने के लिए है कि वह अपने धन–धान्य से राष्ट्र की सेवा करे। लक्ष्मी के वाहन उल्लू का तात्पर्य है कि यदि वह अपने सही कर्म नहीं करेगा तो उसे दिन–रात जगना होगा परन्तु उसे दिन में दिखाई नहीं देगा और रातभर जगना पड़ेगा।

शीतला देवी के चित्रण का तात्पर्य है सेवा भाव। इसके हाथ में वस्त्र और एक हाथ में वर्तन के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि शूद्र अर्थात् सेवक को मुख्यरूप से वस्त्र एवं भोजन की आवश्यकता होती है। जो उसे अन्य तीनों वर्णों की सेवा से प्राप्त होता है। यदि कोई शूद्र पढ़–लिखकर शिक्षित होकर इंजीनियर बन जाता है तो उससे कोई भी पानी पिलाने के लिए कहने में संकोच करेगा। यह देवी की शीतलता एवं सत्कार को दर्शाता है। सेवा करने का कार्य शूद्र करता है। शीतला देवी का वाहन गधा दर्शाया गया है इसका तात्पर्य है कि जो व्यक्ति नहीं पढ़े–लिखेगा वह विवेकशील नहीं होगा इसीलिए इसका वाहन गधा जो विवेकशील नहीं माना गया वह दर्शाया गया। चारों वर्णों के लोगों को उनके कर्त्तव्यों का बोध कराने के लिए इन चार देवियों का चित्रण किया गया है।

ज्ञान के माध्यम से ही हम अपने शरीर को चलाते हैं। ये चारों वर्ण हमारे शरीर में भी दर्शाये गये हैं। ब्राह्मण, सिर हमारे बुद्धि को विकसित करके शरीर को चलाने का कार्य करता है। क्षत्रिय, दोनों भुजायें क्षत्रिय का कार्य करती हैं, शरीर की रक्षा के लिए कार्य करता है। वैश्य, हमारा पेट प्रत्येक अंग को भोजन की पूर्ति करता है और उन्हें बल देता है। शूद्र, हमारे पैर शूद्र की भूमिका में रहते हैं, हमारे पूरे शरीर का बोझ ढो रहे हैं। यदि शरीर के सभी भाग अपने–अपने कार्य नहीं करते हैं तो हमारा शरीर कमजोर और नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार से यदि हम कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को स्वीकारा करेंगे और उसी के अनुरूप कार्य और व्यवहार करेंगे तभी हमारा देश पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

उन्होंने कहा कि हमारे देश में आधी आबादी नारी की है, हमें उनका सम्मान करना चाहिए। नारी ही बच्चों को जन्म देती है। यदि नारी शिक्षित होगी तो परिवार और राष्ट्र प्रगति करेगा। हमारे जितने महापुरुष हुए हैं उन सभी को सर्वप्रथम माताओं ने ही ज्ञान दिया है। इसलिए हमारे देश की आधी आवादी को जागृत होना चाहिए। इसी भावना को लेकर देवी पूजा अर्थात् नारी जागरण का आरम्भ हमारे समाज में प्रचलित हुआ। नारी जागरण एवं चारों वर्णों का सही प्रकार से प्रयोग होने से हमारा समाज और राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा।

हमारे देश में पर्वों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 20 अक्टूबर, 2024 को अपने विचार रखते हुए फकीरे दयानन्द (श्री एस.पी. कुमार) जी ने कहा कि आदिकाल के समय में हमारे देश में राजा लोग राज करते थे और कृषि प्रधान देश होने के नाते किसान अपनी फसल का कुछ भाग सर्वप्रथम राजा को देते थे उसी से राजा अपनी प्रजा की आवश्यकताओं को पूर्ण करते थे, राज्य की सीमाओं की सुरक्षा करते थे। बिना भेदभाव के सभी का समान रूप से ख्याल रखते थे। आज भी हमारे देश में प्रथम नागरिक के रूप में राष्ट्रपति है, वह हमारा प्रथम पुरुष है। आज भी जो कर जनता देती है वह उसी अधिकार क्षेत्र में होता है। भारतवर्ष में अनेक राज्य हैं और सभी राज्य के नेता/प्रमुख व्यक्ति अपने राज्य की रक्षा और सेवा कर रहे हैं, परन्तु आपदा के समय में राष्ट्रपति सर्वोपरि हो जाता है। राष्ट्रपति को यह अधिकार है कि वह सर्वोच्च न्यायालय के न्याय को भी निरस्त कर सकता है। राजा इस प्रकार का होना चाहिए जो सभी की रक्षा करने वाला हो, सभी सीमाओं की रक्षा करने वाला हो, बिना भेदभाव के कार्य करने वाला होना चाहिए और तेजवान होना चाहिए। राजा के इन्हीं गुणों को दर्शाने के लिए गणेश जी के रूप

में चित्रकार ने अलंकृत करके दर्शाने का प्रयास किया है। इसीलिए देवताओं में गणपति जी को प्रथम पुरुष के रूप में माना जाने लगा और सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा–अर्चना की जाने लगी। गणेश के चित्रण से विस्तार से बताते हुए कहा कि चित्रकार ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि राजा के कान बड़े होने चाहिए जिससे सबकी सुनने वाला हो। आंखें छोटी इसलिए दिखाई गई हैं कि उसकी नेत्र इतनी पैनी हो कि समाज में जो कुछ घट रहा है उसे बारीकी से देख सके। राजा कम बोलने वाला होना चाहिए और उसका पेट बड़ा दिखाया गया है कि उसके पास इतनी धन–सम्पदा होनी चाहिए कि आपदा के समय वह सभी की सहायता कर सके। गणेश की सवारी चूहा दर्शाया गया इसका तात्पर्य है कि राजा को यदि किसी घटना की सूचना मिले तो राजा को वहां तुरन्त पहुंचना चाहिए। वही राष्ट्र खुशहाल होता है जिसके गणपति अर्थात् राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं अन्य नेताओं में गणपति के आकृति में दर्शाये गये गुण हों अर्थात् कलाकार ने गणपति का चित्र राजा के प्रतीक के रूप में दर्शाया है।

एक समय था जब महर्षि दयानन्द जी ने स्वराज्य की ज्वालाा लोगों के मन में प्रज्ज्वलित की उस समय समाज असंगिठत था, भिन्न–भिन्न वर्गों एवं मान्यताओं में बंटा हुआ था। महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से लोकमान्य तिलक जी ने गणेश चतुर्थी पर गणेश उत्सव मनाने का प्रचलन प्रारम्भ किया जिससे समाज में संगठन की भावना का उदय हुआ और यह एक पर्व के रूप में भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारतीयों को संगठित कर रहा है। इस पर्व से संगठन तो होता ही है साथ ही साथ हमारी अर्थव्यवस्था भी चलायमान होती है, क्योंकि पर्वों के माध्यम से चारों वर्णों के लोगों को अपने–अपने व्यापार में उन्नति का अवसर प्राप्त होता है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था चलती रहती है और सभी के जीवन में खुशहाली एवं तरक्की के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। इसी कारण से हमारे देश में पर्वों का बहुत बड़ा महत्त्व है। समय–समय पर पर्वों के माध्यम से ऊर्जा प्राप्त होती है, नव–चेतना होती है, अपनी संस्कृति के प्रति आकर्षण होता है और समाज तथा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होता है। इसीलिए भारतवर्ष में अनेक पर्वों का आयोजन समय–समय पर होता है और समाज चेतनशील और जागृत होता है।

वैदकि मार्ग ही सर्वोत्तम मार्ग है

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर के रविवारीय सत्संग में दिनांक 27 अक्टूबर, 2024 को अपने विचार रखते हुए माननीय न्यायमूर्ति श्री जयन्त पटेल जी (पूर्व कार्यकारी मुख्य न्यायाधीष गुजरात उच्च न्यायालय एवं पूर्व न्यायाधीश, कर्नाटक उच्च न्यायालय) ने कहा कि वैदिक विज्ञान कहता है कि कोई भी क्रिया या विचार उत्पन्न होता है तो वह ऊर्जा ब्रह्मांड में एक निश्चित अभिव्यक्ति उत्पन्न करती है। ब्रह्मांडीय किरणें एक विशेष तरीके से चलती हैं, ब्रह्मांड विज्ञान कहता है कि ऊर्जा के चलने का एक विशेष तरीका और विशेष दिशा होती है। एक विचार एक अभिव्यक्ति बनाता है और यह सांस से स्थानांतरित होता है और यह कम्पन उत्पन्न करता है। यह उन तरीकों में से एक है जिसे संचित कर्म या भाग्य के रूप में भी माना जाता है। यह आपका भविष्य या भाग्य तय करता है और दूसरा वर्तमान कर्म है।

वैदिक विज्ञान कहता है कि आपका जीवन पिछले जीवन कर्म और वर्तमान जीवन कर्म के साथ प्रस्तुत किया जाता है, केवल आगे का विकास है यहां तक कि वैदिक विज्ञान के अनुसार आपके संचित कर्म भी कुछ निश्चित तरीकों से स्थापित होते हैं, उनमें से एक तरीका ध्यान है जिसके माध्यम से नकारात्मक विचार कमजोर हो जाते हैं। यदि कोई पिछले जन्म के नकारात्मक कर्म हैं और वर्तमान जीवन में व्यक्ति ध्यान या भक्ति योग कर रहा है तो उसके पूर्व जन्म के नकारात्मक कर्म कमजोर हो जाते हैं। मनुष्य वैदिक मार्ग पर चलकर बड़ा से बड़ा कार्य कर सकता है।

इस अवसर पर आर्यजनों ने माननीय न्यायाधीश जी से न्याय से सम्बन्धित कई प्रश्न किये जिसका उत्तर उन्होंने बड़ी ही गम्भीरता एवं शालीनता के साथ दिया। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि न्यायालयों में बैठे हुए जजों की मजबूरी है कि वह तथ्यों के आधार पर ही निर्णय करें। देश में लोग अपने पक्ष में फैसला कराने के लिए साक्ष्यों एवं सबूतों को प्रस्तुत करते हैं और उन्हीं के आधार पर जजों को निर्णय करना ही पड़ता है यह उनकी बाध्यता होती है।

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर की ओर से
प्रकाश पर्व दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ

फकीरे दयानन्द (एस.पी. कुमार) संरक्षक
कर्नल एच.सी. शर्मा प्रधान
अभिमन्यु कुमार मंत्री
सुशील गुप्ता कोषाध्यक्ष

आर्य समाज मारतहल्लि, बंगलौर (कर्नाटक) मो.–93 4225413 1

ऋग्वेद-1.4.1

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि।।1।।

सुरूपकृत्नुम् - सर्वोच्च निर्माता जिसने सब वस्तुओं का निर्माण किया, परमात्मा

ऊतये - ज्ञान के लिए

सुदुघामिव - गाय माता से दूध प्राप्त करना

गोदुहे - पोषण की कामना वाले व्यक्ति के द्वारा

जुहूमसि - हम उसकी पूजा और स्तुति करते हैं

द्यवि द्यवि - प्रतिदिन नियमित रूप से

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा तथा स्तुति क्यों करते हैं?

हम परमात्मा की पूजा तथा स्तुति कब कर सकते हैं?

सृष्टि के सभी पदार्थों के सर्वोच्च निर्माता, परमात्मा, का हम आह्वान करते हैं। जिस प्रकार गाय का सेवक अपनी गाय माता से जब चाहे पोषण की वृद्धि के लिए दूध निकाल सकता है, उसी प्रकार किसी भी समय तथा किसी भी स्थान पर प्रतिदिन अपनी आत्मा की पोषण के लिए हम सर्वोच्च शक्तिमान निर्माता की पूजा तथा प्रशंसा कर सकते हैं। महान दिव्य ज्ञान तथा परमात्मा की अनुभूति हमारी आत्मा के पोषण हैं।

गाय शारीरिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए प्रतिदिन तथा किसी भी समय पर दूध देने के लिए उपलब्ध रहती है, इसीलिए उसकी पूजा माँ के समान की जाती है। इसी प्रकार परमात्मा भी हमारी पूजा स्वीकार करने के लिए, हमें ज्ञान देने के लिए तथा आध्यात्मिक पथ पर उन्नति के लिए हर समय उपलब्ध रहता है।

जीवन में सार्थकता

क्या परमात्मा की तरह हमारी भी प्रशंसा हो सकती है?

सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए है। गाय हमारी शारीरिक और आर्थिक प्रगति के लिए है। इसलिए दोनों की पूजा किसी भी समय हो सकती है।

यदि आप भी अपने परिवार, समाज या कार्य सम्बन्धी प्रतिष्ठानों की सहायता या सेवा के लिए हर समय उपलब्ध रहते हैं तो आपकी पूजा और प्रशंसा भी परमात्मा और गाय माता की तरह ही होगी। आप भी अपने निकट लोगों की बिना शर्त सेवा करके उनके लिए परमात्मा के समान ही बन सकते हैं। अन्य लोगों के लिए दूध देने वाली गाय बनो - सुदुघामिव गोदुहे।

ऋग्वेद-1.4.2

उप नः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिब।
गोदा इद्रेवतो मदः।।2।।

उप नः - हमारे निकट

सवना - पदार्थों को प्रकाशित करने के लिए, सूर्य की किरणों के द्वारा, बलिदानों अर्थात् यज्ञों को आशीर्वाद देने के लिए

आगहि - कृपया आईये

सोमस्य - सब पदार्थों, ज्ञान और शुभगुणों के निर्माता

सोमपाः - हमारे अन्दर उन सब पदार्थों आदि के संरक्षक

पिब - हम ग्रहण करें

गोदाः - गाय आदि दान में देना, सूर्य की किरणों के द्वारा हमारी दृष्टि को शक्ति प्रदान करना

इत् - इस संकल्प के साथ, इस शक्ति के साथ

रेवतः - पदार्थ, ज्ञान तथा शुभ गुणों को धारण करने वाले लोग

मदः - आनन्दित होते हैं (पदार्थों आदि के द्वारा)

व्याख्या :-

भगवान की शक्तियाँ किस प्रकार असंख्य हैं?

भगवान सभी पदार्थों, ज्ञान तथा शुभ गुणों के निर्माता तथा संरक्षक हैं। वे हमें अपने द्वारा प्रदत्त पदार्थों आदि का प्रयोग करने की शक्ति भी देते हैं।

सर्वोच्च निर्माता परमात्मा इन सब पदार्थों आदि को अपने सूर्य की किरणों से प्रकाशित करते हैं, हमारे बलिदानों तथा कल्याणकारी गतिविधियों को आशीर्वाद देकर हमारे निकट आते हैं। हम उस परमात्मा का आह्वान करते हैं कि वे सदैव हमारे निकट अर्थात् हमारी अनुभूति में रहें।

मानवों को यह निर्देश दिया गया है कि वे अपने पास उपलब्ध समस्त वस्तुओं आदि का आनन्द दूसरों के साथ उन्हें सांझा करते हुए प्राप्त करें। परमात्मा इन सभी पदार्थों आदि को अपने सूर्य की किरणों से प्रकाशित करते हैं और साथ ही उसी अपने सूर्य की किरणों से हमारी आँखों तथा अन्य इन्द्रियों को यह शक्ति प्रदान करते हैं कि हम उन पदार्थों आदि का आनन्द ले सकें।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा द्वारा प्रदत्त पदार्थों आदि के आनन्द को दीर्घकालिक किस प्रकार बनाया जा सकता है?

परमात्मा हर वस्तु का निर्माता तथा संरक्षक है। इससे भी अधिक वे हमें हर प्रकार की शक्ति प्रदान करते हैं जिससे हम उसकी निर्मित सृष्टि का आनन्द ले सकें। उस आनन्द को अपने जीवन में स्थाई बनाने के लिए हमें भी उन सब पदार्थों को किसी भी समय दूसरों के कल्याण हेतु बलिदान करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। इससे हमारा आनन्द वास्तविक तथा दीर्घकालिक हो सकता है। गोदा इद्रेवतो मदः - केवल दाता ही परमात्मा बन सकता है। इसलिए परमात्मा की तरह दाता बनो।

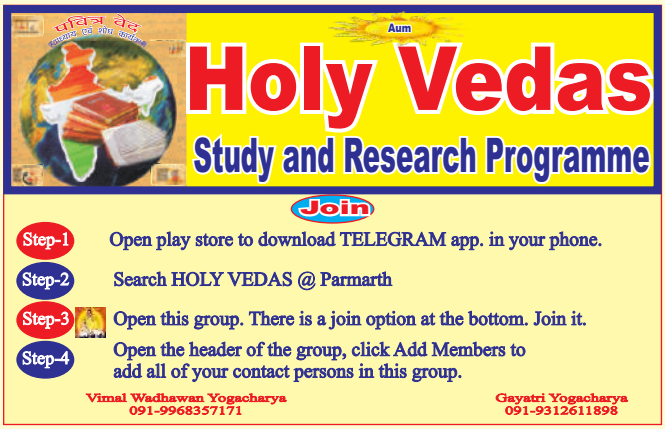

Rigveda-1.4.1

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि।।1।।

Suruupakritnumutaye sudughaamiva godhuhe
Jjuhuumasi dyavidyavi.

Suruupakritnum : Supreme Creator who created all objects, God

utaye : for knowledge

sudughaamiva : just as mother cow is milked

godhuhe : by a person in need of nourishment

juhuumasi : we worship and glorify Him

dyavi dyavi : every day regularly.

Elucidation

Why do we worship and glorify God?

When can we worship and glorify God?

We invoke the Supreme Creator of all objects i.e. God. Just as a cow-boy milkes his mother cow whenever he needs milk for nourishment, similarly we worship and glorify the Almighty Supreme Creator, any time and at any place, every day to obtain nourishment for our soul. Great knowledge and God realisation are the nourishments for our soul.

Just as cow is available all the times everyday for physical and economic needs and that is why she is worshipped as mother. Similarly, God is also available at all times for worship, for seeking knowledge and to progress on spiritual path.

Practical Utility in life

Can we also be glorified like God?

The Supreme Power, God, is for spiritual progress.

Cow is for physical and economic progress. That is why both are liable to be worshipped any time.

If you are available to your family, society or work establishments every time for help or service, you will also be worshipped and glorified like God and cow. You can become God by serving the people around you unconditionally.

Be a milking cow for others - sudughaamiva godhuhe.

Rigveda-1.4.2

उप नः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिब।
गोदा इद्रेवतो मदः।।2।।

Upa nah savanaa agahi somasya somapaah piba.
Godaa id revato madah.

Upa nah : Near us

savanaa : to give light to the objects, with sun rays, to bless sacrifices i.e. yajna

agahi : please come

somasya : being the Creator of all objects, knowledge and virtues

somapaah : being the protector of all such things in us

piba : we receive

godaa : giving cow etc. in donation, sun rays empowering our eyes to see

id : with this determination, with this power

revato : people possessing objects, knowledge and virtues

madah : enjoy (His grants)

Elucidation

How are the powers of God innumerable?

God is the Creator and Protector of all objects as well as empowers us to use His grants.

The Supreme Creator, God, by giving light to all objects with his sun rays and to bless our sacrifices and welfare activities, come to us. We invite Him to be with us always in our realisation. He is the creator as well as protector of all objects, knowledge and virtues in and around us.

Human beings are instructed to enjoy all such possessions while sharing with others. God illumines the objects with His sun rays and at the same time empower our eyes also with the same sun rays to enjoy these objects.

Practical Utility in life

How can we ensure long-lasting enjoyments of His Grants?

God is the Creator and Protector of every thing. Moreover, we enjoy His creation with the powers given by Him. To make such enjoyments permanent in life, we must be prepared to sacrifice such grants any time for the welfare of others. That will be actual and long-lasting enjoyment. Godaa id revato madah - only grantor becomes God. Be a grantor like God.

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में गंगा आरती में सपत्नीक सम्मिलित हुए फकीरे दयानन्द (श्री एस.पी. कुमार)

स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने पौधा भेंटकर सम्मानित किया

दिनांक 22 अक्टूबर, 2024 को परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश में गंगा आरती के दौरान स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने उपस्थित जनसमूह को संकल्प दिलवाते हुए कहा आप सभी आज संकल्प लें कि नदियों के तटों को सुरक्षित करेंगे तथा नदियों के तटों पर वृक्ष लगायेंगे। नदियों को शुद्ध रखेंगे। नदियों को न तो स्वयं गन्दा करेंगे और न ही किसी और को करने देंगे। उन्होंने कहा कि यह कार्य हम केवल अकेले ही नहीं बल्कि पूरे समाज को जगाकर करेंगे।

कर्नाटक से पधारे हुए श्री एस.पी. कुमार जी (फकीरे दयानन्द) का परिचय देते हुए स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने कहा कि आज हमारे बीच में एक 80 साल के नौजवान उपस्थित हैं, जिनका नाम सूरज प्रकाश कुमार है। इन्होंने संकल्प लिया है कि घर–घर यज्ञ हो, घर–घर में संस्कार हो, घर–घर में स्वामी दयानन्द जी तथा वैदिक विचारों का प्रचार हो। सभी को वैदिक धर्म से जोड़ने के लिए कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि विक्की पीडिया की जगह वैदिक पीडिया का विस्तार किया जायेगा।

स्वामी जी ने बताया कि श्री सूरज प्रकाश कुमार जी केरल में एक गुरुकुल तथा बंगलौर में एक गुरुकुल को पल्लवित और पुष्पित कर रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि अब वैदिक पीडिया का एक–एक ब्रान्च वहाँ पर भी चलेगा। वैदिक पीडिया के माध्यम से प्रचार–प्रसार होगा। जिससे उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पूरब से लेकर पश्चिम तक हम सभी एक होकर भारत माता की सेवा कर सकें। मैं श्री सूरज प्रकाश कुमार (फकीरे दयानन्द) जी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ। फकीरे दयानन्द जी सम्पूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से देखते हैं और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में अपना पूरा जीवन लगा रखे हैं। परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश पधारने पर उन्हें एक पौधा भेंट किया जा रहा है जिसे वे दोनों पति–पत्नी मिलकर अपने यहाँ जाकर लगायेंगे और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार को और अधिक तीव्र गति प्रदान करेंगे। माँ गंगा से मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घ एवं यशस्वी जीवन प्रदान करें जिससे श्री कुमार जी संसार के उपकार का कार्य करते रहें। गंगा आरती के अवसर पर स्वामी भक्तानन्द जी (पूर्व नाम श्री विमल वधावन योगाचार्य) भी उपस्थित रहे।

शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण

प्रत्येक रविवार को सत्संग के पश्चात् दोपहर 12 बजे से आर्य समाज भवन में शुगर की आयुर्वैदिक औषधि का निःशुल्क वितरण होता है। कृपया प्रातःकालीन समय में खाली पेट शुगर माप कर आयें।

Free Ayurvedic Eye Drops

Very costly drops prepared with medicinal water of Holy Mother Ganga, Saffron and other material. Made available with courtesy of Shri Subhash Garg ji.

फकीरे दयानन्द (एस पी कुमार)
9342254131

विमल वधावन योगाचार्य
9968357171

52, (Sy. No. 38), L.N. Pura, Adjacent to The Brilliant School, Behind Bata Showroom, ITPL Road, Kundalahalli Gate, Bangalore-560037